

गीता अने वशिष्ठ संहितानां कर्म सिद्धान्तानुं तुलनात्मक अध्ययन

पटेल हिरल अनिरुद्ध¹

सारांश

संहिता अने उपनिषद् मुजब कर्म माटे अेवुं कहुं छे के 'जगत मिथ्या ब्रह्म सत्य'. अेटले ईश्वर काजे अने ईश्वरनी प्रीति सिवाय कोईपण अपेक्षा वगर स्वधर्मने आधीन रहीने इक्त अने इक्त पोताना कर्तव्यनुं पालन करवुं तेने कहेवाय 'कर्म'. 'योग' अेटले हरहंमेश चंचल रहेती छन्दियोने नियंत्रणमां राभीने परम तत्व परमेश्वरमां मन अेकाग्र करवुं. (भ.गी.२/ ४८) आम, कर्मयोग अेटले शरीर अने मननो समन्वय शरीर कर्म करे छे अने मन तेने समर्पित छे. भगवद् गीता मां मोक्षना मार्ग तरीके कर्मयोगनी कल्पना शीघ्रवेले छे. व्यक्तिअे पोतानी जवाबदारी अने कार्योंने निस्वार्थ पणे अने तेना परिणामोनी परवा कर्या विना कर्म करवुं जोईअे आ ज सायी जिवन मुक्त कक्षा अने मुक्तिनो मार्ग छे. कारण के ते व्यक्तिने कर्म अने जन्म जन्मंतर ना यक मांथी मुक्त करे छे. (भ.गी.३) तेवी ज रीते वशिष्ठ संहितामां ऋषि वशिष्ठ समजावे छे के, व्यक्तिअे पोताना कर्तव्योने अलगता साथे अने क्रियाओना परिणामो साथे अपेक्षा वगर निभाववा जोईअे आ रीते व्यक्ति मुक्ति अने परमात्मा साथे तदात्म्य प्राप्त करी शके छे. (व.सं. १) आम बंने ग्रंथोमां कर्मयोगने निस्वार्थ प्रयास द्वारा आध्यात्मिक मुक्तिनो मार्ग बताववामां आवेल छे. कोईपण परिणामनी अपेक्षा वगर कर्तव्य पालन अे आंतरिक शांति आपे छे तेम ज पुनर्जन्मना यकमांथी अलगता तरङ्ग डोरी जाय छे जे व्यक्तिने परमात्मा साथे जोडे छे.

मुख्य शब्दः कर्म, कर्मयोग, अकर्म, मोक्ष, जन्ममरण यक

शोध उद्देश्य

वशिष्ठ संहिता अने भगवद् गीता मां बतावेल कर्मयोग नी साम्यता अने लेद यकासवा माटे.

बंने ग्रंथोमां आपवामां आवेल कर्मयोगनो व्यवहारिक अभिगम समजवा माटे.

शोध प्रकार

वशिष्ठ संहिता अने भगवद् गीता मां रहेल कर्मयोगनुं तुलनात्मक अध्ययन.

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्तिने तेणे भौतिक प्रकृति द्वारा मेणवेला गुणो अनुसार विवश थईने कर्म करवुं ज पडे छे. तेथी कोई पण मनुष्य अेक क्षण माटे पण कर्म कर्या विना रही शकतो नथी. (भ.गी.३/५) जे पोताना कर्तव्य अने स्वधर्मनुं पालन नथी करता तेमज जे कर्म करे छे पण ते धर्मने अनुसार नथी, ते 'अकर्म' छे.

मनुष्यअे ग्रहण करेला प्रकृतिना त्रण गुणो प्रमाणे निर्दिष्टकार्यो अे ज नियत कर्तव्य कर्म छे. मनुष्यअे हंमेशा इणनी

¹ अेम.अेस.सी. - सेम - 4, लडुलीश योग विश्वविद्यालय - अमदावाड - 380060

आसक्ति राभ्या वगर स्व धर्मनुं पालन करवुं जोईये. जे मनुष्य पोताना कर्मना इण प्रति आसक्ति धरावे छे ते मनुष्य ते कर्मनुं कारण पण होय छे . अने आ रीते ते आवा कर्म इणोना परिणाम स्वरूप सुभ - दुःख भोगवे छे. (भ.गी.२/४७) योगी पोताना योग थकी कर्मनो यज्ञ करीने अणीशुद्ध योग अग्नि द्वारा योग उन्नति ने प्राप्त करे छे ज्यारे कर्मयोगी ईच्छाओनो यज्ञ करीने मोक्षने पामे छे. (व.सं)

भगवद् गीता अनुसार कर्मयोग

भगवद् गीतामां श्लोक

“कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि” ॥

अनुसार इणनी ईच्छा राभ्या विना शास्त्र ज्ञान अनुसार कर्तव्य धर्म तरीके करतुं नित्य कर्म सात्त्विक गुण वाणुं होय छे. इण सहितनुं कर्म अे बंधननुं कारण बने छे. माटे आवुं कर्म अशुभ छे. दरेक मनुष्यने तेना नियत कर्तव्य कर्मो पर स्वाभीत्व होय छे परंतु तेणे इण प्रति आसक्ति राभ्या वगर कर्म करवा जोईये. आवा निष्काम कर्म निःसंदेह मनुष्यने मुक्तिना मार्ग प्रति दोरी जाय छे. दरेक व्यक्तिने पोतानुं नियत कर्तव्य कर्म करवानो अधिकार छे परंतु तेने कर्मना इणो पर अधिकार नथी. दरेक व्यक्तिने पोतानी जातने कदापी पोताना कर्मना इणोनुं कारण मानवुं जोईये नहीं अने स्वकर्म न करवामां पण कही आसक्त थवुं जोईये नहीं. (भ.गी.२/४७) सङ्गता अने निष्कृततानी सर्व आसक्ति छोडी दईने कर्तव्य कर्मो करवा, मननी आवी क्षमता योग कहेवाय छे. (भ.गी.२/४८) भगवानना कार्यों माटे थती सेवा अे ज कर्मयोग अथवा बुद्धियोग कहेवाय छे. (भ.गी.२/५१)

मनुष्य ज्यारे मनमां उद्धवती इन्द्रियतृप्तिनी सर्व कामनाओनो परित्याग करे छे अने ज्यारे आ प्रमाणे विशुद्ध थयेवुं तेनुं मन, आत्मांमां ज संतोष प्राप्त करे छे, त्यारे ते विशुद्ध दृष्टि येतनामां रहेलो, स्थितप्रज्ञ कहेवाय छे. (भ.गी.२/५५) इन्द्रियविषयोनुं चिंतन करवाथी मनुष्यने तेमां आसक्ति थाय छे अने आवी आसक्ति थी कामना उत्पन्न थाय छे तथा काममांथी क्रोध उद्धवे छे. (भ.गी.२/६२) क्रोधमांथी पूर्ण मोह उत्पन्न थाय छे अने मोहथी स्मरण शक्तिनो विभ्रम थाय छे. ज्यारे स्मरण शक्ति भ्रमित थई जाय छे, त्यारे बुद्धि नष्ट थाय छे अने बुद्धि नष्ट थवाथी मनुष्य संसार कुपमां पुनःपतन पामे छे.

बुद्धियोग परब्रह्म उपर संपूर्णपणे आश्रित छे अने आ रीते सर्व इन्द्रियो ने सरणताथी वशमां लावी शक्य छे. तेथी बंने प्रकारना योग, धर्म तथा तत्वदर्शन तरीके अेकबीजा पर आधारित छे. तत्वज्ञान रहित धर्म, केवल भावुकता छे अथवा क्यारेक धर्मानघता होय छे अने धर्मविहीन तत्वज्ञान अे मानसिक तर्क वितर्क छे. (भ.गी.३/३)

हृदयनी शुद्धि थया विना ग्रहण करेलो सन्यास सामाजिक व्यवस्थांमां केवल उपद्रवस्वरूप नीवडे छे (भ.गी.३/४) पोताना नियत कर्तव्य कर्ममां जोडायेला रहीने, भव बंधनमांथी मुक्त थईने भगवद् धाममां जवाना पोताना ज्वनना उद्देश्य माटे मनुष्य अे कर्म करता रहेवुं अे वधु श्रेयस्कर छे. (भ.गी.३/७)

सामान्य ज्वन निर्वाह माटे पण मनुष्यने कर्म तो करवुं ज पडे छे तेथी, विशिष्ट सामाजिक स्थिति तथा गुणने ध्यानमां रापीने नियत कर्तव्य कर्म अेवी रीते सुनिश्चित करवामां आवेला छे के तेओ उद्देश्यने परिपूर्णा करी शके. तेथी मनुष्यअे भगवान विष्णु प्रीति अर्थे कर्म करवुं जोईये. आ जगतमां करेवुं कोई पण अन्य कर्म बंधननुं कारण थशे, कारण के सारा के नरसा कर्मना इण तो होय ज छे अने कोईपण इण कर्मना करता ने बंधनकारक होय छे. माटे कृष्ण ने प्रसन्न करवा माटे कृष्ण भावना परायण थई कर्म करवुं पडे अने ज्यारे मनुष्य आ रीते कर्म करे छे, त्यारे ते मुक्त अवस्थांमां रहे छे. (भ.गी.३/८)

वेदोना निदर्शन विना करेवुं कोई पण कर्म, विकर्म अथवा अनधिकृत कर्म के पाप पूर्ण कर्म कहेवाय छे. कर्म इणमांथी

मुक्त रहेवा माटे हंमेशा वेदोमांथी निदर्शन प्राप्त करवुं जोईये. (म.गी.३/ १५) जे मनुष्य आत्मांमां ज आनंद पामे छे, तथा जेनुं जिवन आत्म साक्षात्कार युक्त होय छे अने जे पोतानी अंदर ज पूर्णपणे संतुष्ट रहे छे, तेने माटे कशुं कर्तव्य रहेतुं नथी. (म.गी.३/१७)

भगवान अे समस्त जिवो ना पिता छे अने जो जिवो पथ भ्रष्ट थई जाय, तो परोक्ष रीते आ जवाबदारी भगवाननी ज ठरे. तेथी, ज्यारे ज्यारे आ नियामक सिद्धांतोनो अनादर थाय छे, त्यारे भगवान स्वयं समाजने सुधारवा माटे अवतरे छे. (म.गी.३/२४) विद्वान मनुष्योअे सकाम कर्मोमां आसक्त अेवा अज्ञानी लोकोना मनने विचलित करवा जोईये नही, तेमज तेमने कर्मनो त्याग करवा माटे प्रोत्साहन आपवुं जोईये नही, परंतु भक्तिभाव पूर्वक कर्ममां व्यस्त रहेवा प्रेरणा आपवी जोईये. (म.गी.३/२५)

जुव मिथ्या अहंकारना प्रभावथी मोह ग्रस्त थईने, पोतानी जातने समग्र कार्योनी करता मानी ले छे, પણ हकीकतमां भौतिक प्रकृतिना त्रण गुणो द्वारा ते थता होय छे. भौतिक चेतना वाणो मनुष्य मिथ्या अहंकारने कारणे अेम मानी ले छे के ते पोते ज बधी वस्तुओनी करता छे. ते जाणतो नथी के शरीर रुपी यंत्र भौतिक प्रकृति द्वारा उत्पन्न थयुं छे अने प्रकृति परमेश्वरना निरीक्षण हेठण कार्य करे छे. (म.गी.३/२७)ज्ञानी मनुष्य પણ पोतानी प्रकृति प्रमाणे ज कार्य करे छे, कारण के दरेक मनुष्य त्रण गुणो द्वारा प्राप्त करेली प्रकृतिनुं ज अनुसरण करे छे. (म.गी.३/३३) जिवननी कोईपण अवस्थाथी, अथवा तेनी तीव्र अगत्यता अनुभववाय त्यारथी मनुष्य कृष्ण भावना अर्थात भगवद् भक्ति द्वारा छन्द्रीयोने संयमित करवानो प्रारंभ करी शके छे अने कामने भगवद्प्रेममां परिवर्तित करी शके छे के जे मानव जिवननी सर्वोच्च पूर्ण अवस्था छे. (म.गी.३/४१)

वशिष्ठ संहिता अनुसार कर्मयोग

‘प्रवर्तक कर्म’, ‘सकाम कर्म’ अेटले ‘छय्छ साथेनुं कर्म’ अथवा ‘प्रेरित क्रिया’ जे चोक्कस परिणाम अथवा पुरस्कारनी अपेक्षामां लेवायेली क्रियाओनी संदर्भ आपे छे. आ कृत्यो व्यक्तिगत ध्येय अथवा छय्छ प्राप्त करवाना उद्देश्य साथे करवामां आवे छे अने वारंवार स्व-हित द्वारा प्रेरित थाय छे. सकाम कर्म आसक्ति, अहंकार अने कर्ताभावनी भावना साथे संबंधित छे, जे कारण अने असरना यक अने नवी कर्मनी छापनी रचनामां परिणामे छे. (व.सं.१/२०)

‘निष्काम कर्म’, ‘निवर्तक कर्म’ अेटले के ‘छय्छहीन क्रिया’. जेने क्रियाना इण अथवा पुरस्कारनी अपेक्षा विना करवामां आवेली क्रिया तरीके व्याख्यायित करवामां आवे छे. क्रियानी आ शैली इरजना उद्देश्य माटे अथवा अन्यने मद्द करवा माटे करवामां आवे छे अने ते निःस्वार्थता, निराकरण अने बिन-कर्मशीलतानी भावना साथे संबंधित छे. निष्काम कर्मने कर्म, जन्म अने मृत्युना यकमांथी मुक्त थवानुं रहस्य मानवामां आवे छे. (व.सं.१/२१)

निवर्तक कर्मने बे प्रकारमां वर्गीकृत करवामां आवे छे: बाह्य कर्म अने आभ्यन्तर कर्म. (व.सं.१/२२)

वेद संमत साधनोथी संपन्न जे बाह्य प्रयोगात्मक क्रिया थाय छे तेने बाह्य कर्म कहे छे. बाह्य कर्म अे व्यक्तिना बाह्य कार्योनी उल्लेख करे छे, जेमां शारीरिक कार्यो, वाणी अने सामाजिक क्रियाप्रतिक्रियाओनी समावेश थाय छे. आ वर्तन अन्य लोको माटे दृश्यमान छे अने बहारनी दुनियांमां थाय छे. बाह्य कर्म समाज अने विश्वमां व्यक्तिना कार्योने समावे छे, जेम के व्यवसाय, अन्य लोको साथेना संबंधो, वगैरे. (व.सं.१/२३)

आत्मा मां बुद्धि द्वारा मानसिक रुपथी वेदोक्त क्रिया नुं अनुपालन अे आभ्यन्तर कर्म कहेवाय छे. आभ्यन्तर कर्म अे व्यक्तिना आंतरिक कार्यो, जेम के विचारो, लागणीओ अने छरादाओनी उल्लेख करे छे. आ क्रियाओ आंतरिक विश्वमां हाथ धरवामां आवे छे अने अन्य लोको माटे स्पष्ट नथी. आभ्यन्तर कर्म व्यक्तिनी आंतरिक प्रवृत्तियोने समावे छे, जेम के

विवारो, लागाणीओ, धरादाओ वगैरे. (व.सं.१/२३) आभ्यंतरकर्मअनुष्ठान नित्य कर्म, विधिपूर्वक ज्ञान अने लक्ष्मिथी युक्त थएने करवुं जोईये. तेनाथी सतत आनंद प्राप्त करी शकय छे. (व.सं.१/२४)
ज्ञानी होय के अज्ञानी. ज्यां सुधी शरीर रूप साधन वर्तमान छे, त्यां सुधी वर्णश्रमोक्त कर्मअनुष्ठान मुक्ती माटे अवश्य करवुं जोईये. (व.सं.१/२५) वास्तवमां कर्मकांड आ ज छे, अने आ ज कर्म मात्र नुं मूळ छे. (व.सं.१/२६) ज्ञानी तेमज मुमुक्षु पण कर्म अनुष्ठान ज करे छे, जेथी आपणो पण आ ज कर्मोनुं ज्ञानपूर्वक अनुष्ठान करवुं जोईये. (व.सं.१/२७)
कर्मनो संपूर्णपणो क्षय न थाय त्यां सुधी ज्व आ ज प्रमाणे जन्मजन्मांतर ना यक मां इर्या करे छे. कर्मनो क्षय थया बाद आत्मसुधी थाय छे तेमज आ शुद्धताथी ज आत्मा नुं ज्ञान थाय छे. (व.सं. ५/१४) मात्र ध्यानयोगना बलथी ज मुक्ति थई शके छे, अने तेना द्वारा ज मृत्यु सूयक लक्षणथी शरीरनो अंतकाण पण जाणी शकय छे. (व.सं. ५/१५)

तुलनात्मक अध्ययन

वशिष्ठ संहितामां योगना योगीक कर्म द्वारा चैतन्यनी प्राप्ति करवानो सिद्धांत प्रस्थापित करेल छे, ज्यारे गीताजुना कर्मयोगमां सांसारिक कर्म द्वारा परम चैतन्य ने प्राप्त करवानो सिद्धांत प्रस्थापित करेल छे.

वशिष्ठ संहितामां योगी ना कर्मनुं महत्व दर्शावेल छे, ज्यारे गीताजु मां दैहिक कर्मनुं महत्व दर्शावेल छे.

वशिष्ठ संहितामां योग द्वारा बाह्य स्तरथी आंतरिक स्तर सुधी पहोंयवानो योग मार्ग अने तेना द्वारा परम चैतन्यनी उपासना सूयवेल छे, ज्यारे गीताजु मां आंतरिक स्तरथी देहस्तरथी देवतुल्य स्तर सुधी पहोंयवानी यात्रा आपवामां आवेली छे.

वशिष्ठ संहिता मुजब कर्मयोग योगीनी मानसिकता अने चित्त शुद्धि पर आधारित छे. जेमां, योगीना मनना कर्म पण केवा होवा जोईये अने बाह्यकर्म करता आभ्यान्तर कर्म वधु महत्त्वपूर्ण गणवामां आवेल छे. ज्यारे गीताजुना कर्मयोगमां मन - वचन - कर्म अने त्रिषेय पर ध्यान टोरवामां आवेल छे.

वशिष्ठ संहितामां दर्शाव्या अनुसार सामान्य रीते योगीनी मानसिकता संन्यासीनी होय. ज्यारे, गीताजुना कर्मयोग मुजब समाजमां रहीने पण कर्मयोगीनी भूमिका संन्यासीनी होय छे तेम बतावेल छे.

प्रवर्तक शब्दने आपणो जो व्याकरणमां समज्जये तो, प्रवृत्ति करे ते प्रवर्तक, जे प्रवृत्ति करावे ते प्रवर्तक, अने जे कर्म द्वारा प्रवृत्ति थाय ते पण प्रवर्तक. ज्यारे गीताजुना कर्मयोगमां द्रष्टानुं महत्व वर्णवेल छे. योग मार्गमां स्वयं ने ईश्वर सुधी पहोंयाडी अटकी नथी जवानुं परंतु, ईश्वर सम्यक बनवानुं छे. आम गीताजु मां द्रष्टा अने सृष्टा वच्येनो लेट बताववामां आवेल छे. जो तमे द्रष्टा बनशो तो परमात्मा समान बनशो. जो तमे सृष्टा बनशो तो ज्वात्मा बनशो. अने ज्वात्मानी कक्षाथी उपर उठवानी कणा अे ज तो 'कर्मयोग' छे.

तेवी ज रीते जे निवृत्ति साधी शके ते निवर्तक, जे निवृत्ति करावे ते निवर्तक, अने जे कर्म द्वारा निवृत्ति साधी शकय ते निवर्तक. वशिष्ठ संहिता सूयवे छे के निवर्तक कर्मनो अभ्यास चेतना अने आध्यात्मिक विकासनी उच्य स्थितिओ प्राप्त करवा माटे जरूरी छे. बाह्य विक्षेपोमांथी छन्द्रीयोने पाछी भेँथी लेवाथी, मन केन्द्रित अने स्पष्ट बने छे, जेनाथी आत्मनी ठोडी समज्जण थाय छे.ज्यारे गीताजुना कर्मयोगमां निष्काम कर्म द्वारा जगतनी आशक्तिने छोडीने, ईश्वरओने परमात्मा गम्य बनावीने, ज्वनमुक्त कक्षामां ज्वात्माने स्थापित करवानो सिद्धांत प्रतिपादित करवामां आवेल छे. जेना द्वारा स्थितप्रज्ञतानी प्राप्ति थाय छे. जेने आपणो योग मार्गमां सातत्य पूर्ण निष्काम समाधि स्थण तरीके ओणभवामां आवे छे.

वशिष्ठ संहिता मुजब योगीना बाह्य कर्ममां शास्त्रोक्त कर्म अनुष्ठान दर्शावेल छे. जेना द्वारा योगीनी मानसिकता शास्त्र प्रत्ये प्रीति करावी शास्त्र अनुसार ज आगण वधारे छे . ज्यारे आष्यन्तर कर्ममां ज्ञानपूर्वक कर्म अनुष्ठान क्रियाओ करी सिद्धि प्राप्त करता आगण वधवानुं बतारवेल छे. ज्यारे गीताजुना कर्मयोग मुजब सृष्टि यज्ञमां निष्काम भावे भाग लई ने कार्य पूर्ण करावे छे.

वशिष्ठ संहिताना योग मार्गमां स्वयं योग सिद्ध थवुं पडे छे ज्यारे गीताजुना कर्मयोगमां ईश्वरमां शरणागत बनी योग सिद्धि प्राप्त करी शक्य छे. योगमार्ग आपणने सर्वग्राह्य छे . ज्यां सुधी नाडी शुद्धि के चक्र शुद्धि थती नथी, ज्यां सुधी आंतरिक मण योगीने बाधित करे छे त्यां सुधी योग सिद्धि प्राप्त थती नथी. अटला माटे ज आपणे नाडीशुद्धि अने चक्र शुद्धि नी क्रियाओ करीछे छीछे जेना द्वारा योग मार्गमां आगण वधी शक्य. जे आंतरिक अने बाह्य मणनो सिद्धांत योगमार्ग मां बतारवेल छे. जे ज सिद्धांत गीताजु मां संचित, प्रारब्ध, अने क्रियमण कर्मना रूपे बतारवेल छे. ज्यां सुधी प्रारब्ध, संचित, अने क्रियमण कर्मनो मण शुद्ध थतो नथी त्यां सुधी ज्वात्मा शुद्ध आत्मा बनी शकतो नथी.

कर्मयोगनी पराकाष्ठांमां गीताना कर्मयोग मुजब निष्काम कर्मद्वार मुक्ति अपावे छे. ज्यारे, वशिष्ठ संहितामां कर्मयोग नी सिद्धि निवर्तक कर्म द्वारा योग सिद्धि अपावे छे. अने बने योगनी सिद्धि ज्वन मुक्त स्थितिनी प्राप्ति करावे छे. जे योगी के कर्मयोगीने जन्म मरणना चक्रमांथी मुक्ति अपावे छे.

कर्मयोगनी ज्वन साथेनी सुसंगतता

गीताजुना कर्मयोग मुजब ज्वननो हेतु इक्त टकी रहेवा माटेनो ज नथी परंतु, शास्त्रो मुजब ज्वनना चार उद्देश्य परिपूर्ण करवानो छे. जे चार उद्देश्य धर्म- अर्थ- काम- मोक्ष छे. गीताजुना कर्मयोग आपणने अेवुं सूचवे छे के कर्म अेवा करीछे जेना द्वारा धर्मनुं पालन थाय, अर्थनी प्राप्ति थाय. अहीया काम नो अर्थ ईच्छाओ ना समूहने काबूमां राभीने नैष्ठिक रीते मोक्षनी प्राप्ति करवी आज ज्वननो सनातन उद्देश्य छे. अत्यारना समयमां आ सिद्धांतने आपणे लूली यूक्या छीछे. जे धरा बधा दुःखोनुं उत्पादन करे छे. जे दुःखोनुं निवारण कर्मयोग थकी थई शके छे.

जेवी रीते आपणे सौं जाणीछे ज छीछे के क्रोध अे दरेक दुर्गुणोने राजा छे. जे धरा बधा दुर्गुणोने सैनिक स्वरूपे लई शरीर पर आक्रमण करे छे. मन द्वारा थयेल कर्मो नो पण प्रभाव लविष्यमां कारण शरीरथी स्थूल शरीरमां प्रवेशी रोग उत्पन्न करे छे. तेथी ज आपणे जो आपणा क्रोधने वश करी लईछे तो आपणे ज्वन निरोगी ज्वी शकीछे छीछे.

कर्मयोग आपणने लालय तेमज डर अेम बने पर काबु मेणवता पण शीभवे छे. जेवी रीते दुर्योधन अे लालय द्वारा हक विनानुं अने अधर्मना रस्ते चाली पयावी पाडवानी भावना करी जेना द्वारा तेनुं निकंदन थयुं ज्यारे अर्जुन लय उपर काबु मेणवीने धर्म अने नीति द्वारा स्वकर्मनुं पालन करवाथी राज्यनी प्राप्ति थई. आ ज रीते कर्मयोग द्वारा दरेक मनुष्य लालय अने डर पर काबु राभीने ज्वन सङ्ग बनावी शके छे.

आम, कर्मयोग आपणने अेवुं ज्ञान आपे छे के अेकबीजा पर वेर अने द्वेष नी भावना राभ्या वगर मन, परिस्थिति, शरीर, येतना, अने आत्मा प्रति जागृति राभी मात्रने मात्र श्रेष्ठ कर्म पर ज ध्यान आपवुं जोईछे. तेमज हंमेशा ईश्वर काजे अने ईश्वरनी प्रीति सिवाय कोईपण अपेक्षा वगर इक्त अने इक्त पोताना कर्तव्यनुं पालन स्वधर्म ने आधीन रहीने करवुं जोईछे.

निष्कर्ष

आपणी उपनीचदो ये कहेली वात कदाय सामान्य जन जिवनना मानसपट उपर समजल आपी न पल शके, ये ज वाक्य ने गीताजु कर्मयोगना स्वरूपमां सरण शब्दोमां समजावे छे के, अपेक्षा विना कर्म करवामां आवे तो ये शुद्ध कर्म बने छे अने ते कोछ बंधनमां बाधीत थता नथी. जे कर्मयोगीने धीमे धीमे ईश्वरीय मार्ग पर वधुने वधु प्रेरित करे छे. वेद, वेदांग, वेदांत आ बधा शास्त्रो ये आध्यात्मिक यात्रा सङ्ग बनावता ग्रंथो छे जेनी उपासना अने अभ्यास करवाथी भौतिक जगतनी माया छूटे छे अने धीमे धीमे जवात्मा अध्यात्म मार्ग पर गति करे छे.

संदर्भ

भगवद् गीता (गीता प्रेस गोरखपुर- स्वामी सुभरामदास)

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥२- ४७॥
योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥२- ४८॥
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥२- ५१॥
प्रजहाति यदा कामान्सर्वाङ्गानि मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥२- ५५॥
ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥२- ६२॥

लोकेऽस्मिन्निविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ ।
ज्ञानयोगेन सांख्यानं कर्मयोगेन योगिनाम् ॥३- ३॥
न कर्मणामनारम्भान्नेष्कर्म्यं पुरुषोऽश्रुते ।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥३- ४॥
यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन ।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥३- ७॥
यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥३- ९॥
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥३- १५॥
यस्त्वात्परतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः ।
आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥३- १७॥
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्या कर्म चेदहम् ।
संकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः ॥३- २४॥
न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् ।
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् ॥३- २६॥
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥३- २७॥
सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥३- ३३॥
तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥३- ४१॥

वसिष्ठ संहिता - योगकांड (कैवल्यधाम- श्री मन माधव योग मंदिर समिति)

"वर्णाश्रमणं कर्मैव कामसहकल्पपूर्वकं ।
प्रवर्तकं भवेदेत सर्पसरे वै प्रवर्तनात्" ॥१.२०॥

"तदेव ज्ञानसम्पुक्तं सर्वकामविवर्जितं |
निवर्तकं भवेदतज्जनमनस्तु निवर्तलनात्" || १.२१ ||
"निवर्तकं च वेदेषु द्विविधं सुरयो विदुः |
ब्रह्मभ्यन्तरं सेति प्रत्येकं मुक्तिसधनम्" || १.२२ ||
"ब्रह्माम् बहिः क्रियेत्येवं यत्तद्विहितसाधनं |
अभ्यन्तरं तु बुद्धियव बुद्धिनुस्थानमत्माणि " || १.२३ ||
"तयोरभ्यन्तरं कुर्यान्नित्यकर्म यथाविधि |."
ज्ञानभक्तिसमयुक्तः सदानन्दमवाप्नुयत" || १.२४ ||
"ज्ञानिनो'ज्ञानिनो वापि यवदेहस्य साधनाम् |
तवद्ववर्णाश्रमप्रोक्तं कर्म मुक्तये" || १.२५ ||
"इत्येवं कर्मसर्वस्वं कर्मकाण्डं च तत्त्वतः " |
उपादिस्य तद ब्रह्म योगनिस्तो'भवात् स्वायं " || १.२६ ||
"यतः कर्मैव कुर्वन्ति ज्ञानिनो'पि मुमुक्षवः" |
ततस्त्वामापि विप्रेन्द्र ज्ञानेनाचर कर्म तत् " || १.२७ ||
"एवमेव भ्रमेज्जिवो यवतकर्मपरिक्षयः |."
कर्मक्षयदात्मसुद्धिः सुद्धेनैवात्मवेदनम्" || ५.१४ ||
"चिहनाइराभ्यन्तैर्बाह्यैर्जिफित्व गच्छेद्यथारुचि |
यवत क्षेत्रल भवेत् तवत साध्यां सर्वं प्रसाधयेत्" || ५.१६ ||

सन्दर्भग्रन्थसूची

- [1] धेरष् संहिता, योग पब्लिकेशन ट्रस्ट – ISBN – 978-81-86336-35-9, संस्करण – 2011
- [2] वसिष्ठ संहिता (योगशास्त्र), दार्शनिक साहित्यानुसन्धान विभाग, कैवल्यधाम श्रीमन्माधव योग मन्दिर समिति
- [3] Bhagavad-Gita: As It Is, A. C. BHAKTIVEDANTA SWAMI PRABHUPADA, PUBLISHER: THE BHAKTIVEDANTA BOOK TRUST, ISBN: 9789384564209, EDITION: 2019
- [4] Hathapradeepika Jyotsna, Editor – Swami Maheshanand, Publisher – Kaivalyadham, ISBN – 978-818948485139, Version – 2004
- [5] Apte, V. S. (1988). The student's Sanskrit-English dictionary: Containing appendices on Sanskrit prosody and important literary and geographical names in the ancient history of India. Motilal Banarsidass Publ.